सेम. - 1 AEC - 1

प्रश्न :- व्यावहारिक हिन्दी से आप क्या समझते हैं? व्यावहारिक हिन्दी की मुख्य समस्याओं का वर्णन करें।

⇒ **भूमिका :-**

भारत एक बहुभाषी देश है। संसार में लगभग 3000 भाषाएँ बोली जाती है, जिसमें अधिकतर भाषाएँ एवं बोली भारत की है। इनमें से सभी भाषाएँ न्यूनाधिक रूप में प्रयोजनमूलक योग्यता रखती है। हिन्दी में शिक्षा का माध्यम बनने की प्रयोजनमूलकता है वो वैज्ञायिक सोच और अनुसंधान को व्यक्त करने की पूरी प्रयोजनमूलकता अभी नहीं है। आज वैश्वीकरण और प्रतिस्पर्द्धा का युग है। इसने बहुत-सी भाषाओं की प्रयोजनशीलता को सीमित अथवा कुंठित कर दिया गया है। वे प्रतिस्पर्द्धा की दौड़ से बाहर हो रही है। विश्व स्तर पर रूसी, अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच, जापानी, हिन्दी आदि कुल 14 ही भाषाएँ प्रतियोगिता में है। ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों में मौलिक चिन्तन या सृजन कर रहे है और अपनी ही भाषा की लक्ष्मण रेखा से बँधकर भाषा को अभिव्यक्ति सक्षम बना रहे है, वे ही प्रयोजनमूलक भाषा विकसित कर रहे है।

परिभाषा :-

व्यावहारिक हिंदी को कई नामों से जानते हैं जैसे - प्रयोजनमूलक हिन्दी, कामकाजी हिन्दी तथा प्रकार्यात्मक हिन्दी। संकुचित अर्थ में व्यावहारिक हिन्दी को बोलचाल की हिन्दी भले कहा जाए परंतु वृहद अर्थ में वह विविध क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाली हिंदी ही है। प्रकार्यात्मक हिन्दी से तात्पर्य जब कोई कार्य योजनाबद्ध तरीके से निरंतरता हेतु कार्य का स्वरूप बनाया जाता है।

06 SAT 218-147 2022 AUGUST

AUGUST'22
SU MO TU WE TH FR SA
1 2 3 4 5 6
7 8 9 10 11 12 13
14 15 16 17 18 19 20
21 22 23 24 25 26 27
28 29 30 31

साधारण शब्दों में व्यावहारिक हिंदी को परिभाषित करते हुए कह सकते हैं कि - जीवन के विविध कार्य क्षेत्रों से संबंधित प्रयोग होने वाली हिन्दी को व्यावहारिक हिंदी कहते हैं। हिन्दी के व्यावहारिक होने का अर्थ है कि हिन्दी को प्रशासन और व्यवसाय के कामकाज के प्रयोग की भाषा बनाना।

व्यावहारिक हिन्दी को कई रूपों में परिभाषित किया गया है जो इस प्रकार है -

किसी व्यवसाय या कार्यक्षेत्र के लोगों द्वारा उस व्यवसाय या कार्यक्षेत्र के प्रयोजन के लिए इस्तेमाल की जाने वाली भाषा व्यावहारिक हिन्दी या प्रयोजनमूलक हिन्दी कहलाती है।

दैनंदिन जीवन में हमारी विभिन्न भूमिकाएँ होती हैं; जैसे पारिवारिक, व्यावसायिक आदि। हमारा भाषा व्यवहार इन्हीं भूमिकाओं के आधार पर बदलता रहता है। जिस तरह की भाषा में हम अपने घर वालों से बात करते हैं, वैसी भाषा में हम अपने शिक्षकों से अथवा सहपाठियों से नहीं करते हैं। क्योंकि जहाँ पहले व्यवहार में अनौपचारिकता होती है वहीं दूसरे व्यवहार में औपचारिकता।

व्यावहारिक हिन्दी में औपचारिकता के अलावा दूसरी महत्त्वपूर्ण बात जो इसे सामान्य भाषा से अलग करती है, वह है उसकी विशिष्ट शब्दावली। उस स्थान या कार्यालय विशेष में कार्यरत सभी लोग जिस शब्दावली का व्यवहार करते हैं, वह बाहर या आम जीवन में प्रयुक्त नहीं होते।

Life is ten percent what happens to you and ninety percent how you respond to it. -Charles Swindoll

विशेषताएँ :-

व्यावहारिक हिन्दी की निम्नलिखित विशेषाएँ हैं -

(i) व्यावहारिक हिन्दी सामान्य भाषा व्यवहार और साहित्यिक भाषा व्यवहार से भिन्न होती है।

(ii) इसमें परम्परागत भाषा रूप के साथ नये भाषा रूप भी होते हैं।

(iii) व्यावहारिक हिन्दी के प्रत्येक रूप की अपनी विशिष्ट शब्दावली और संरचना होती है।

(iv) इसमें प्रयुक्ति के अनुरूप हिन्दी की सभी शैलियों का प्रयोग होता है।

(v) व्यावहारिक भाषा को सप्रयास विकसित किया जाता है। इस दृष्टि से यह कृत्रिम और औपचारिक होती है।

(vi) यह अर्जित भाषा है, इसे सयास सीखना पड़ता है।

(vii) इसकी भाषा स्पष्ट, अलंकाररहित, अभिधात्मक और एकार्थी होती है।

(viii) इसका स्वरूप प्रयोजनपरक होता है। क्योंकि यह सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रयुक्त होती है।

(ix) इसमें पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग किया जाता है।

(x) शब्द संपदा को समृद्ध करने के लिए भारतीय तथा पश्चिमी भाषाओं से भी शब्द ग्रहण किया जाता है।

समस्याएँ :-

व्यावहारिक हिन्दी के सामने कई समस्याएँ आती हैं जिसमें से प्रमुख समस्याएँ निम्न है -

(i) विश्वस्तरीय भाषाओं के आगमन से हिन्दी भाषा में बदलाव आई।

(ii) वैश्वीकरण और मुक्त बाजार के सम्मोहन ने हिन्दी के व्यवहार में अवरुद्ध उत्पन्न किया।

(iii) सरकारी नीतियों की निष्क्रियता,

(iv) व्यावहारिक हिन्दी में अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग।

(v) व्यावहारिक हिन्दी में तकनीकी शब्दावली की कमी,

(vi) व्यावहारिक हिन्दी का प्रयोग करने में हीन समझने की मानसिकता,

निष्कर्ष :-

व्यावहारिक हिन्दी आजीविका के नये आयामों का उद्घाटन करता है। प्रयोजनमूलक हिन्दी के ज्ञान का सीधा अभिप्राय है नियोजन मूलक ज्ञान। यदि हम हिन्दी की भाषिक प्रयुक्तियों के प्रति सृजनात्मक दृष्टिकोण अपनाकर प्रयत्न करें तो भविष्य में हिन्दी के व्यक्तिगत रूप का विकास होता है। वस्तुतः हिन्दी के एक विशेष प्रयुक्त रूप के लिए रूढ़ हो गया है। अतः हम कह सकते हैं व्यावहारिक हिन्दी से हमारे जीवन में तरक्की और प्रौढ़ता आती है।